बौद्ध धर्म का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव: मिथिला और नेपाल में उद्भव और पतन की यात्रा

Rekha Tailor

NET-History

सारांश

प्राचीन भारत, नेपाल और मिथिला के इतिहास में बौद्ध धर्म का उद्भव एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इसके संस्थापक गौतम बुद्ध थे, जिन्होंने गृह त्याग कर समाज में एक नये दृष्टिकोण की नींव डाली। उनके गृह त्याग की घटना इतिहास में 'महाभिष्क्रमण' के रूप में प्रसिद्ध है। बौद्ध धर्म के प्रणेता गौतम बुद्ध ने पहले दो ऋषियों से ज्ञान प्राप्ति के प्रयास किए, लेकिन वे संतुष्ट नहीं हो सके। इसके बाद, निरंजना नदी के किनारे उरूवेला नामक स्थान पर कठोर तपस्या की, जहां भी उन्हें कोई सफलता नहीं मिली। अंततः 35 वर्ष की आयु में, बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें वास्तविक ज्ञान प्राप्त हुआ, जिसे बौद्ध धर्म का आद्य ज्ञान माना जाता है।बुद्ध ने इस ज्ञान के आधार पर सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया, जिसे 'धर्मचक्र परिवर्तन' के रूप में जाना जाता है। उनके उपदेशों ने न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी बौद्ध धर्म को फैलाया, और भारतीय दर्शन और चिंतन की एक अमूल्य धरोहर स्थापित की।

इस शोध पत्र में, बौद्ध धर्म के उद्भव, उसके सामाजिक प्रभावों और इसके पतन पर विस्तार से चर्चा की गई है, विशेष रूप से मिथिला और नेपाल के संदर्भ में। यह अध्ययन बौद्ध धर्म के सामाजिक और धार्मिक पहलुओं की गहरी समझ प्रदान करता है, जो इन क्षेत्रों के ऐतिहासिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुख्य शब्द: बौद्ध धर्म, गृह त्याग, ज्ञान प्राप्ति, उपदेश, धर्मचक्र परिवर्तन, महानिर्वाण

भूमिका

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महान गौतम बुद्ध का व्यक्तित्व और उनके कार्य न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी गहरी छाप छोड़ने वाले थे। उनका योगदान भारतीय समाज और संस्कृति को सशक्त बनाने के साथ-साथ पूरे विश्व में फैल गया। मिथिला और नेपाल के प्राचीन इतिहास और संस्कृति की यात्रा में बौद्ध धर्म ने एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। इन क्षेत्रों में बौद्ध धर्म के प्रभाव ने समाज के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं को आकार दिया। विशेष रूप से मिथिला और नेपाल के सामाजिक जीवन में धर्म का गहरा प्रभाव देखा गया है, जो इस क्षेत्र के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विकास को प्रभावित करता है।बौद्ध धर्म को विश्व का पहला लोकतांत्रिक धर्म माना जाता है, और यह उन विचारों और सिद्धांतों का विस्तार करता है जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता और धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देते हैं। महात्मा बुद्ध का जन्म सिद्धार्थ के नाम से हुआ था, और वे अत्यंत चिंतनशील और एकांतप्रिय व्यक्ति थे। उनका पालन-पोषण उनकी विमाता और मौसी प्रजापति ने किया। 18 वर्ष की आयु में उनका विवाह राजकुमारी यशोधरा से हुआ और उन्हें एक पुत्र का आशीर्वाद मिला। इस समय उन्हें यह अहसास हुआ कि वे संसारिक जीवन के मोह में बंधे हुए हैं। इस बीच, एक दिन संयोगवश उन्होंने एक वृद्ध व्यक्ति, एक रोगी और एक मृतक को देखा। यह दृश्य उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ और उन्होंने अपने राजसी ठाट-बाट को छोड़ने का संकल्प लिया।

गृह त्याग की यह घटना इतिहास में 'महाभिष्क्रमण' के नाम से जानी जाती है। इसके बाद, उन्होंने सत्य और ज्ञान की खोज में आलार और उदक नामक दो ऋषियों से मार्गदर्शन प्राप्त किया, लेकिन उन्हें शांति नहीं मिली। फिर, उरूवेला

नामक स्थान पर निरंजना नदी के तट पर अपने पांच साथियों के साथ कठोर तपस्या की, किंतु वहां भी उन्हें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। अंततः, उन्होंने तपस्या का मार्ग छोड़कर अपना अकेला रास्ता अपनाया और 35 वर्ष की आयु में बोधि वृक्ष के नीचे वास्तविक ज्ञान प्राप्त किया। इस ज्ञान के आधार पर वे 'बुद्ध' के रूप में प्रसिद्ध हुए।
आधुनिक शोध और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यह घटना महत्वपूर्ण है, और आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के अनुसार, "साक्ष्य वह रेखांकन है जो अतीत या वर्तमान घटनाओं से संबंधित ज्ञान की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सके।" इस प्रकार, किसी घटना का क्रमबद्ध ज्ञान और तथ्यों का विश्लेषण उसे एक प्रमाणित साक्ष्य में बदल देता है, जिससे शोधकर्ता और इतिहासकार घटनाओं की सत्यता का मूल्यांकन करते हैं।

बौद्ध धर्म का प्रचार

गौतम बुद्ध ने अपने बुद्धत्व की प्राप्ति के बाद अपने उपदेशों को फैलाना शुरू किया और सबसे पहले सारनाथ में अपने पांच भिक्षु साथियों को धर्म का उपदेश दिया। ये पांच भिक्षु, जिन्हें भारतीय इतिहास में पंचवर्गीय नाम से जाना जाता है, बौद्ध धर्म के पहले अनुयायी बने। धीरे-धीरे इन अनुयायियों की संख्या बढ़ी और गौतम बुद्ध ने संघ का गठन किया। इस संघ की प्रतिष्ठा बढ़ने के साथ-साथ एक शपथ अनिवार्य कर दी गई, जिसमें व्यक्ति को यह स्वीकार करना होता था कि वह बुद्ध, धर्म और संघ की शरण में जाता है।
बौद्ध धर्म के प्रचार के सिलसिले में गौतम बुद्ध कपिलवस्तु भी गए, जहां उन्होंने अपने पुत्र राहुल और भाई नंद को संघ में शामिल किया। इसके अलावा, उनके प्रिय शिष्य आनंद की विशेष प्रेरणा पर, उन्होंने अपनी विमाता प्रजापति को भी संघ में शामिल किया। इसके बाद, महात्मा बुद्ध ने उत्तर प्रदेश, बिहार और नेपाल के विभिन्न क्षेत्रों में अपने उपदेशों का प्रचार किया। अपने जीवन के अगले 45 वर्षों तक उन्होंने इस धर्म का प्रचार किया, और अंततः 80 वर्ष की आयु में 483 ई. पू. कुशीनगर में उनका महापरिनिर्वाण हुआ, जिसे भारतीय इतिहास में 'महापरिनिर्वाण' के नाम से जाना जाता है।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएं

महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित शिक्षाएं समाज के कल्याण और आत्मिक उन्नति के मार्गदर्शन के रूप में कार्य करती हैं। उनके शिक्षाओं का आधार चार प्रमुख सत्य और अष्टांग मार्ग हैं।

1. **चार सत्य**
   महात्मा बुद्ध के अनुसार, इस संसार में चार प्रमुख सत्य हैं:
   - दुःख (दुख का अस्तित्व),
   - दुःख समुदाय (दुख के कारण),
   - दुःख निरोध (दुख का निराकरण),
   - दुःख निरोध के उपाय (दुख के निवारण का मार्ग)।
2. **अष्टांग मार्ग**
   बुद्ध ने मोक्ष प्राप्ति के लिए अष्टांग मार्ग का सिद्धांत प्रस्तुत किया। यह आठ मार्ग हैं:
   - सम्यक् दृष्टि (सही दृष्टिकोण),
   - सम्यक् संकल्प (सही संकल्प),
   - सम्यक् वाणी (सही वाणी),
   - सम्यक् कर्म (सही कर्म),
   - सम्यक् आजीव (सही आजीविका),
   - सम्यक् व्यायाम (सही प्रयास),
   - सम्यक् स्मृति (सही ध्यान),
   - सम्यक् समाधि (सही समाधि)।
3. **नैतिक आचरण**

महात्मा बुद्ध ने अपने अनुयायियों को 10 नैतिक आचार संहिताओं का पालन करने के लिए प्रेरित किया। ये शील (नैतिक व्रत) इस प्रकार थे:

- अहिंसा (निस्वार्थ दया और करुणा),
- सत्य (सत्य बोलना),
- अस्तेय (चोरी से बचना),
- उपरिग्रह (धन और वस्त्रों का त्याग),
- ब्रह्मचर्य व्रत (नैतिक संयम),
- संगीत और नृत्य का त्याग,
- फूल और सुगंधित पदार्थों का त्याग,
- असामाजिक भोजन का त्याग,
- कोमल शैय्या का त्याग,
- कामिनी और कंचन का त्याग।

4. **कर्म का सिद्धांत**
   बौद्ध धर्म कर्म के सिद्धांत को मानता है, जिसमें कहा गया है कि मनुष्य इस संसार में जो कर्म करता है, वही कर्म उसे फलित होता है। यह सिद्धांत संसार के अस्तित्व और व्यक्तिगत कर्तव्यों के बीच संबंध स्थापित करता है।
5. **पुनर्जन्म और आत्मा का अस्वीकार**
   महात्मा बुद्ध ने आत्मा और ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करते हुए पुनर्जन्म पर विश्वास व्यक्त किया। बौद्ध साहित्य में महात्मा बुद्ध के सहस्रों जन्मों का उल्लेख मिलता है।
6. **अनीश्वरवाद**
   महात्मा बुद्ध अनीश्वरवादी थे। जब उनसे भगवान की सत्ता के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने न तो यह कहा कि भगवान है और न ही नकारा।
7. **जाति प्रथा का विरोध**
   महात्मा बुद्ध ने जाति प्रथा का कठोर विरोध किया और सामाजिक समानता का उपदेश दिया। इस कारण से धीरे-धीरे सभी जातियों और धर्मों के लोग बौद्ध धर्म में शामिल होने लगे।
8. **मानव कल्याण के लिए उपदेश**
   महात्मा बुद्ध ने केवल उन्हीं विषयों पर उपदेश दिया जो मानवता और समाज के कल्याण से संबंधित थे।
9. **वेदों और संस्कृत के प्रति अविश्वास**
   महात्मा बुद्ध को वेदों और संस्कृत की पवित्रता में विश्वास नहीं था। उन्होंने अपने उपदेशों को पाली भाषा में दिया और तर्क का सहारा लिया ताकि सामान्य जन तक उनकी बात पहुंच सके।
10. **निर्वाण का लक्ष्य**
    बौद्ध धर्म में मानव जीवन का प्रमुख उद्देश्य निर्वाण की प्राप्ति है। अन्य धर्मों के विपरीत, जहां निर्वाण केवल मृत्यु के बाद माना जाता है, बौद्ध धर्म में यह इसी जीवन में प्राप्त किया जा सकता है। निर्वाण का अर्थ है दुखों से मुक्ति और आत्मिक शांति की प्राप्ति।

महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं ने मानवता को एक नया दृष्टिकोण दिया, जो आज भी लोगों के जीवन में प्रासंगिक है। उनके उपदेशों से हमें न केवल आंतरिक शांति और संतुलन मिलता है, बल्कि समाज में समानता, करुणा और अहिंसा का महत्व भी समझ में आता है।

बौद्ध संघ व्यवस्था

महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म का प्रचार देश-विदेश में किया, और उनके अनुयायी इस उद्देश्य के लिए मठों और विहारों का

निर्माण करते थे, जिन्हें संघ कहा जाता था। संघ में रहने वाले लोग भिक्षु होते थे, जो अपना जीवन यापन केवल भिक्षाटन पर करते थे। प्रारंभ में केवल पुरुषों के लिए संघ के सदस्यता की व्यवस्था थी, लेकिन समय के साथ महिलाओं के लिए भी अलग संघ बनाए गए। महात्मा बुद्ध ने स्वयं लोगों को संघ में प्रवेश दिलवाया, और प्रत्येक सदस्य को एक शपथ लेने की अनिवार्यता थी। मठ को संघ की सामूहिक संपत्ति माना जाता था, और भिक्षुओं को सिर के बाल कटवाकर गेरुआ वस्त्र पहनने पड़ते थे।बौद्ध धर्म के अनुयायी श्रंगार और सौंदर्य प्रसाधनों से दूर रहते थे, और दिन में केवल एक बार भोजन करते थे। वर्षा ऋतु में वे एक स्थान पर ठहरकर बौद्ध धर्म का प्रचार करते थे। यदि कोई भिक्षु धर्म के नियमों का उल्लंघन करता था, तो उसे दंडित किया जाता था, और कभी-कभी गंभीर अपराधों में भिक्षु को संघ से बाहर भी किया जा सकता था। महिलाओं के लिए अलग मठ बनाए गए थे, ताकि संघ में किसी प्रकार का भ्रष्टाचार न हो सके। संघ का संगठन लोकतांत्रिक था, और अनुशासन पर विशेष ध्यान दिया जाता था। किसी भी मतभेद को शांति से बातचीत करके सुलझाया जाता था, और विवादित मामलों में बहुमत से निर्णय लिया जाता था।

बौद्ध धर्म का प्रभाव

बौद्ध धर्म प्राचीन भारत का प्रमुख धर्म था, और इसके प्रभाव समाज और राष्ट्र पर गहरे थे। इसके प्रभाव को निम्नलिखित तरीकों से देखा जा सकता है:

1. बौद्ध धर्म ने देश के विभिन्न हिस्सों में एकता और राष्ट्रीयता की भावना को प्रोत्साहित किया।
2. अहिंसा के सिद्धांत के प्रचार से युद्ध और हिंसा की भावना पर अंकुश लगा, और समाज में शांति तथा प्रेम का माहौल बना।
3. बौद्ध धर्म ने विश्व शांति की शिक्षा दी। सम्राट अशोक, जिन्होंने युद्ध का मार्ग त्याग कर शांति की दिशा में कदम बढ़ाया, इसका प्रमुख उदाहरण हैं।
4. बौद्ध धर्म के प्रचारक जब विदेशों में गए, तो उन्होंने भारत के अन्य देशों से संबंध स्थापित किए, जिससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई।
5. बौद्ध धर्म की स्थापना के बाद भारत में कई बौद्ध ग्रंथों की रचना की गई, जिससे भारतीय धार्मिक साहित्य को एक नया आयाम मिला।
6. जातिप्रथा को कमजोर करने और समाज में शांति व प्रेम का माहौल बनाने में बौद्ध धर्म ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
7. बौद्ध धर्म ने अन्य धर्मों को भी उदारवादी दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया, और भारत में मूर्तिपूजा की परंपरा की शुरुआत हुई।
8. बौद्ध धर्म के कारण भारतीय साहित्य में वृद्धि हुई, जिससे आम जनता को साहित्य पढ़ने का अवसर मिला। त्रिपिटक और जातक कथाएं बौद्ध साहित्य का अहम हिस्सा मानी जाती हैं।
9. बौद्ध धर्म ने मूर्तियों, भवनों और चित्रकला की शिल्पकला को बढ़ावा दिया, और तत्कालीन समय के मठ, स्तूप और गुफाएं इस कला के विकास का प्रमाण हैं।
10. बौद्ध धर्म ने मठों का निर्माण करके भारतीय शिक्षा व्यवस्था को एक नया रूप दिया। नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय पहले बौद्ध विहार थे, जहां विदेशों से भी विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते थे।

इस प्रकार, बौद्ध धर्म ने न केवल धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से, बल्कि सांस्कृतिक और शैक्षिक दृष्टिकोण से भी भारत में गहरा प्रभाव डाला।

बौद्ध धर्म का पतन

बौद्ध धर्म का उत्थान जितनी तेजी से हुआ था, उतना ही तेजी से इसका पतन भी हुआ। इसके पतन के प्रमुख कारणों में हिन्दू धर्म में चलने वाली सुधार लहर और बौद्ध धर्म को अशोक और कनिष्क जैसे सम्राटों से प्राप्त राज्याश्रय का समाप्त होना था। जैसे-जैसे यह समर्थन कम हुआ, बौद्ध धर्म के अनुयायी और संस्थाएँ कमजोर होती गईं। बौद्ध धर्म का पतन

इसलिए भी तेज़ी से हुआ क्योंकि समाज में व्याप्त कुछ आंतरिक समस्याएं भी इसके अवसान का कारण बनीं।महात्मा बुद्ध ने अपने समय में जिन बुराइयों और भ्रष्टाचार के खिलाफ धर्म की स्थापना की थी, वही बुराइयाँ धीरे-धीरे बौद्ध धर्म में भी प्रवेश कर गईं। विशेष रूप से भिक्षुओं के आचरण में गिरावट आई, और विहार, जो पहले साधना और ध्यान के केंद्र हुआ करते थे, अब भ्रष्टाचार और अनुशासनहीनता के अड्डे बन गए। संघ में महिलाओं के प्रवेश के बाद यह स्थिति और बिगड़ गई, और बौद्ध धर्म में अनुशासन की हानि होने लगी।

इसके अलावा, बौद्ध धर्म की दो प्रमुख शाखाएं बन गईं, जो आपसी मतभेद और संघर्ष का कारण बनीं। इस बंटवारे ने धर्म की एकता और प्रभावशीलता को कमजोर किया, जिससे यह अवनति की ओर अग्रसर हुआ।

विदेशी आक्रमणों ने भी बौद्ध धर्म के संस्थानों, विशेष रूप से बौद्ध विहारों, को भारी क्षति पहुँचाई। हून, कुषाण और शुंग आक्रमणों के दौरान बौद्ध विहारों को लूटा गया और नष्ट किया गया, जिससे बौद्ध धर्म की स्थिति और कमजोर हुई। इसके बाद, राजपूत काल में भी बौद्ध धर्म का पतन शुरू हो गया, क्योंकि यह समय हिन्दू धर्म के पुनर्निर्माण और शक्ति का था, और बौद्ध धर्म को राजनीतिक और सामाजिक समर्थन की कमी महसूस होने लगी।

महात्मा बुद्ध के बाद, कोई महान नेतृत्व बौद्ध धर्म को प्रेरित करने के लिए नहीं उभरा। इससे धर्म की व्यापकता और प्रभाव में गिरावट आई। इसके अतिरिक्त, पाली भाषा की जगह संस्कृत ने बौद्ध धर्म की धार्मिक किताबों और शिक्षाओं में जगह ले ली। संस्कृत के इस्तेमाल ने धर्म को एक जटिल रूप में बदल दिया, जो आम जन तक पहुँचना कठिन हो गया। यह परिवर्तन बौद्ध धर्म के लिए नुकसानदायक साबित हुआ, क्योंकि पाली भाषा अधिक सरल और आम जनता के लिए सुलभ थी।

इन तमाम कारणों के चलते, बौद्ध धर्म का पतन हुआ और धीरे-धीरे यह भारतीय समाज में कम महत्वपूर्ण हो गया। हालांकि, बौद्ध धर्म ने भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव छोड़ा, लेकिन समय के साथ इसकी प्रमुखता कम हो गई और यह एक उपेक्षित धर्म बन गया।

सारांश

बौद्ध धर्म, जो अहिंसा पर आधारित है, न केवल भारतीय समाज का अभिन्न हिस्सा रहा है, बल्कि यह आज भी वैश्विक शांति का एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। इसकी अहिंसा की शिक्षा और शांतिपूर्ण जीवन की अवधारणा आज भी दुनिया भर में प्रभावी हैं और यह इसकी ऐतिहासिक देन के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा, बौद्ध संघों की संरचना लोकतांत्रिक थी, जो उस समय के धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण में एक नया आयाम प्रस्तुत करती थी। इसने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को विदेशों में फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और इसके अनुयायी न केवल भारत बल्कि अन्य देशों में भी बौद्ध धर्म के संदेश को फैलाने में सफल रहे।हालाँकि, महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद, बौद्ध धर्म आंतरिक मतभेदों और धार्मिक जटिलताओं का शिकार हो गया। इसके साथ ही अयोग्य उत्तराधिकारियों के भ्रष्ट आचरण ने इसे और कमजोर किया। परिणामस्वरूप, बौद्ध धर्म धीरे-धीरे जनमानस से दूर होता गया और इसका प्रभाव भी कम होता गया। इसके बावजूद, बौद्ध धर्म ने भारतीय धर्म, दर्शन, और संस्कृति को गहरे रूप से प्रभावित किया।बौद्ध धर्म की शिक्षाएं और विचार आज भी भारतीय भूमि और विदेशों में लोकप्रिय हैं। यह न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण योगदान देने वाला धर्म है। बौद्ध धर्म की शांति, सहिष्णुता, और आत्म-ज्ञान की शिक्षा आज भी विश्वभर में अनगिनत व्यक्तियों को प्रेरित करती है।

संदर्भ सूची

1. रमाशंकर त्रिपाठी, *प्राचीन भारत का इतिहास*, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, 1982।
2. विमलचन्द्र पॉण्डेय, *प्राचीन भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास*, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, 1992।
3. सुमन गुप्ता, *प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास*, स्वामी प्रकाशन, जयपुर, 2000।
4. रोमिला थापर, *प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास*, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 2001।

5. शैलेन्द्र सेंगर, *प्राचीन भारत का इतिहास*, अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2005।
6. डी.एन. झा, *प्राचीन भारत: एक रूपरेखा*, मनोहर पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2005।
7. प्रशान्त गौरव, *प्राचीन भारत- लगभग 600 ई. तक*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009।
8. कैलाश खन्ना, *प्राचीन भारत का इतिहास*, भाग-1, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2010।
9. बी. स्टेन, *A History of India*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2012।
10. ए.एस. डूडी, *Ancient History of India*, नेहा पब्लिशर्स, दिल्ली, 2012।
11. रणबीर चक्रवर्ती, *भारतीय इतिहास का आदिकाल- प्राचीनतम पर्व से 600 ई. तक*, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, दिल्ली, 2012।
12. अबुस्सलाम, *भारतीय इतिहास*, शिवांक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012।
13. सोहन राज तातेड़, *प्राचीन भारत का आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक इतिहास*, भाग-1, खण्डेलवाल पब्लिशर्स, जयपुर, 2015।